ISSN 2348-8425

सत्राची

SATRAACHEE

An International Registered and Peer Reviewed Research Journal

वर्ष 9, अंक 30, जनवरी-मार्च, 2021

प्रधान संपादक
डॉ. कमलेश वर्मा

संपादक
आनन्द बिहारी

शोधालेख

हिंदी कहानियों में वृद्ध जीवन की व्यथा

○ सोनी साव

मृत्यु से रू-ब-रू होने की आखिरी स्थिति का नाम है बुढ़ापा। बाल्यावस्था तथा वृद्धावस्था जीवन के ये दो छोर हैं जिसके बीच जीवन गतिमान रहता है। बाल्यावस्था में जहाँ मनुष्य संसार के मोह-माया से दूर, दुःख के अनुभव से अनभिज्ञ तथा समाज के स्वार्थीपन से अजनबी बना रहता है, वहीं बुढ़ापा जीवन का ऐसा पड़ाव है जहाँ व्यक्ति समाज के सभी नियमों को जानकर भी उससे अजनबी बना रहता है, या कह सकते हैं कि अजनबी बना दिया जाता है। समय परिवर्तनशील है और समय हर क्षण मनुष्य को वृद्धावस्था की ओर लिए जाता है। समय को रोका नहीं जा सकता; वह मानव जीवन को अंततः आखिरी अवस्था में पहुँचा ही देता है।

जीवन की आखिरी अवस्था में पहुँचकर व्यक्ति न केवल शारीरिक रूप से कमजोर हो जाता है बल्कि मानसिक रूप से भी कमजोर हो जाता है। वह धीरे-धीरे समाज और परिवार में उपेक्षित होता चला जाता है। बाल्यावस्था में एक बच्चे को जितना प्रेम अपने माता-पिता से मिलता है, वह प्रेम बच्चे से माता-पिता को नहीं मिलता। दोनों अवस्था में व्यक्ति वही रहता है लेकिन स्थिति के बदल जाने से प्रेम और सम्मान मिलने की मात्रा में भारी अंतर आ जाता है। यही वह समय होता है जब व्यक्ति को अपने परिवार की सबसे अधिक जरूरत होती है। लेकिन उसे छोड़ दिया जाता है अकेला। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह समाज से कट कर नहीं रह सकता है। ऐसे में वृद्धों का जीवन समाज ही नहीं बल्कि परिवार, जिसे उसने ही गढ़ा है, में भी उपेक्षित बना दिया जाता है।

भारतीय समाज में प्रारम्भ में वृद्धों की स्थिति सम्मानजनक रही है। आधुनिकता की चादर ओढ़े जो परंपराएँ व विचार हमारे समक्ष उपस्थित हैं, वह अत्यंत सोचनीय है। आधुनिकता के आग्रह में पारिवारिक मूल्यों में पतन स्पष्ट रूप से नजर आने लगा है। परिवार नामक संस्था का पतन खासकर संयुक्त परिवार का टूटना वृद्ध जीवन के लिए खतरनाक साबित हुआ है। परिवार के बिखरने से वृद्धों का वजूद संकट में है। वह केन्द्र की परिधि से बाहर होता जा रहा है। पारिवारिक सदस्यों में नैतिक मूल्यों के पतन होने से जो व्यक्ति किसी समय घर का मुखिया हुआ करता था वह वृद्धावस्था में बोझ बन जाता है जिसे परिवार के सदस्य एक दूसरे पर मढ़ने की कोशिश करते हैं। यहीं से वृद्ध जीवन की समस्याएँ आकार ग्रहण करती हैं। आरंभ में यह एक पारिवारिक समस्या थी, परंतु अब यह एक सामाजिक समस्या बन चुकी है।

वृद्धाश्रम की संख्या में निरंतर वृद्धि समाज तथा परिवार दोनों की अमानवीयता को उजागर करता

लेखक परिचय एवं संपर्क :

- प्रो. ओमप्रकाश सिंह : अध्यक्ष, भारतीय भाषा केन्द्र, जे.एन.यू., नई दिल्ली, मो. 989944861
- शशि शर्मा : सिलीगुड़ी, दार्जीलिंग, पं. बंगाल; मो. 9832321080.
- विजया प्रियदर्शिनी : शोधप्रज्ञ, हिंदी, वीरकुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा।
- सीताराम गुप्ता : ए.डी.-106, पीतमपुरा, दिल्ली; मो. 9555622323
- आशुतोष पार्थेश्वर : एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज; मो. 9934260232.
- संगीता मौर्य : अस्सिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, राजकीय महिला स्ना. महाविद्यालय, गाजीपुर, उ.प्र.। मो. 9026115390
- सोनी साव : प्राध्यापक, हिंदी विभाग, पंचकोट महाविद्यालय, सरबड़ी, पुरुलिया, पं. बंगााल, पिन : 723121; मो. 993355309
- रोबी लललोमकिमी : शोधार्थी, हिंदी विभाग, मिजोरम विश्वविद्यालय, आइजोल; मो. 9862382721
- अमिष वर्मा : असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, मिजोरम विश्वविद्यालय, आइजोल; मो. 9436334432
- निरुत्पल बोरा : शोधार्थी, हिंदी भवन, शांतिनिकेतन, पं. बंगाल।
- ऋषि कुमार : एसोसिएट प्रोफेसर, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, 56A, बी.टी. रोड, कोलकाता-700050; मो. 938466106
- ब्रजबिहारी पांडेय : असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी, आरिएंटल कॉलेज, पटना सिटी, पटना।
- अजीत प्रताप सिंह : सहायक प्राध्यापक, मध्य. एवं आधु. इतिहास विभाग, रमाबाई राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अकबरपुर, अम्बेडकरनगर, मो. 9616397075
- जगमोहन सिंह : सहायक प्रवक्ता, हिंदी, रानीगंज गर्ल्स कॉलेज, पश्चिम बंगाल। संपर्क : 8967477761